कलि-म-ए-तौहीद का हक़ अदा करें

मुहम्मद अज़हर मदनी

हज़रत उसमान रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का बयान है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिस शख्स की मौत इस हालत में आई कि उसे यक़ीन था कि अल्लाह के सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं तो वह जन्नत में जाएगा। (सहीह मुस्लिम-६)

कलिम-ए-तौहीद इस्लाम की बुनियाद है और सबसे महत्वपूर्ण और महान स्तंभ है इस कलिमा को पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ईमान का सबसे सर्वश्रेष्ठ हिस्सा करार दिया है और यही कलिमा जहन्नम से मुक्ति दिलाने का सबसे बड़ा माध्यम है और इसी कलिमे के इक़रार करने वाले और इसके तक़ाज़ों को पूरा करने वालों के लिये जन्नत के आठों दरवाज़े खोले जाएंग और इसी के ज़रिए नबी पाक की शिफाअत (सिफारिश) और हौज़े कौसर का पानी नसीब होगा। इसलिये इस कलिम-ए-तैइबा को समझने, पढ़ने और इसके तक़ाज़ों को पूरा करने का प्रयास और इसकी क्षमता की दुआ भी करनी चाहिए। कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः''सो (ऐ नबी!) आप यक़ीन कर लें (जान लें) कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद बरहक़ नहीं'' (सूरे मुहम्मद-१९)

कलिम-ए तौहीद का सबसे पहला हक़ यह है कि इसके अर्थों और आशय को अच्छी तरह समझें और इल्म व बसीरत के साथ इसके तक़ाज़ों को पूरा करें। दूसरा हक़ः ''लाइलाहा इल्लल्लाहो'' का इक़रार (स्वीकार) करने वाले का यह ईमान व अक़ीदा हो कि अल्लाह के अलावा कोई माबूद नहीं, वही असल माबूद है और उलूहियत की तमाम खूबियों का हक़दार भी वही है और इसमें कण भर भी शक न हो। पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया मैं इस बात की गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद बरहक नहीं और मैं उसका रसूल हूं इसलिये जो बन्दा इन दो गवाहियों के साथ अल्लाह तआला से मिले गा इस हालत में कि उसे इनके बारे में कोई सन्देह नहीं तो ऐसा शख्स जन्नत में जाने से नहीं रोका जाएगा। (सहीह मुस्लिम) तीसरा हक़ यह है कि यह गवाही और इक़ारार नामा निस्वार्थता पर आधारित हो और शिर्क की तमाम खराबियों के साथ दिखावे से भी पवित्र व साफ हो। चौथा हक़ यह कि यह स्वीकार सच्चे दिल से हो। रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो शख्स सच्चे दिल से इस बात की गवाही दे कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसके बन्दे और रसूल हैं तो अल्लाह उस पर जहन्नम को हराम क़रार दे देता है। (सहीह बुखारी व सहीह मुस्लिम) पांचवीं शर्त मुहब्बत है कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः बाज़ लोग ऐसे भी हैं जो अल्लाह के शरीक (साझीदार) औरों को ठेहरा कर उनसे ऐसी मुहब्बत रखते हैं जैसी मुहब्बत अल्लाह से होनी चाहिए और ईमान वाले अल्लाह की मुहब्बत में बहुत सख्त होते हैं'' (सूरे बक़रा-१६५) छठी शर्त यह है कि कलिमए तौहीद के तईं हर तरह की फरमांबरदारी हो और हर एतबार से अपने आप को अल्लाह का आज्ञापालक बना दे। सातवीं शर्त यह है कि कलिम-तौहीद को उसकी तमाम शर्तों को उदारता से कुबूल करें। अल्लाह से दुआ है कि वह हमें कलि-म-ए तैइबा को उसकी तमाम शर्तों के साथ समझने और उस पर अमल करने की क्षमता दे। आमीन

मासिक

इसलाहे समाज

दिसंबर 2021 वर्ष 32 अंक 10

जुमादल ऊला 1443 हिजरी

संरक्षक

असग़र अ़ली 'सलफ़ी'

संपादक

मुहम्मद ताहिर

- ❑ वार्षिक राशि 100 रुपये
- ❑ प्रति कापी 10 रुपये

सम्पर्क

मासिक इसलाहे समाज (हिन्दी)
4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद
दिल्ली-110006
फोन : 23273407 फ़ैक्स: 23246613
RNI No. 53452/90

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद इरफान शाकिर ने मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की ओर से एम.एस. प्रिन्टर्स, A-145 गली न० 8 चौहान बांगर, सीलमपुर, दिल्ली-53 से छपवा कर अहले हदीस मंज़िल 4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद दिल्ली-6 से प्रकाशित किया।

सम्पादक: मुहम्मद ताहिर

लेखक के विचारों से संस्था का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

इस अंक में

1. कलिम-म-ए-तौहीद का हक़ अदा करें 2
2. प्राकृति के कानून की पाबन्दी में कठिनाइयों का समाधान 4
3. अल्लाह की तसबीह बयान करें 7
4. अल्लाह के रसूल स० की इबादतें 9
5. अच्छे लोगों की संगत 12
6. इस्लाम में समता और न्याय का अधिकार 15
7. पैगम्बर मुहम्मद स० के जीवन के शिष्टाचार 16
8. प्रेस रिलीज (चाँद की रूयत) 18
9. इस्लाम अम्न व शान्ति का झण्डावाहक 19
10. हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया 22
11. हदीस 23
12. प्रेस रिलीज़ 26
13. अपील 27
14. अहले हदीस मंज़िल (विज्ञापन) 28

ईमेल:-
Jaridahtarjuman@gmail.com
Jamiatahlehadeeshind@hotmail.com

अब 'इसलाहे समाज' इन्टरनेट पर भी उपलब्ध है

वेब साइट:- www.ahlehadees.org

प्रकति के कानून की पाबन्दी में कठिनाइयों का समाधान और खतरात से हिफाज़त है

मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी

इन्सान अगर प्रकृति के तक़ाज़ों और दुनिया की हकीक़तों को जानने की कोशिश करे तो उसे इस संसार के पालनहार का न केवल ज्ञान होगा बल्कि वह उसकी मर्ज़ी और खुशी का भी इच्छुक और तलबगार होगा। और इन्सान पर यह बिल्कुल स्पष्ट हो जायेगा कि इस दुनिया के बनाने वाले, इस संसार की व्यवस्था को बरपा करने वाले और इसे प्रकृति के कानून पर चलाने वाले ने इतने बड़े व महान संसार में कोई एक कण भी न बेकार और फालतू पैदा किया और न ही बे मक़सद। जो इन्सान भी इस सीधी सी बात को समझ ले गा वही कामयाब व सफल है और इस्लाम की पूरी शिक्षा का दर्शन भी यही है कि इन्सान अपनी हकीक़त को पहचान कर उसकी उपासना और इबादत में ज़िन्दगी गुज़ार दे। यही बन्दगी उसका सबसे बड़ा मकसद है जिसके लिये वह पैदा किया गया है। अब उसे इन्सान से मुहब्बत अल्लाह और असल स्वामी की वजह से होगी बल्कि हर सृष्टि और हर कण से रिश्ता मज़बूत करने, उसका हक़ अदा करने और उसके साथ अच्छा बर्ताव करने में उसे अल्लाह और उसके बन्दों के अधिकारों को अदा करने की चिन्ता होगी और जब यह चिंता और एहसास व्यवहारिक रूप में ढ़लने लगे तो समझ लेना चाहिए कि व्यक्ति व जमाअत, समाज व सूसाइटी, खानदान व कबीला और देश व समुदाय में हर तरफ सन्तुष्टि है और सुगम वातावरण है और अब यह बेहतरीन समाज का आदर्श बन गया। दुनिया में अम्न व शान्ति और भाईचारा की फरावानी हो गई और जिस देश व समाज और खानदान व क़बीले को यह उपलब्धि हो गई तो समझ लेना चाहिए वही देश विकसति है और यही तरीक़ा अनुसरणीय, आइडियल और आदर्श है।

इस ज़मीन व आसमान के बीच पाये जाने वाले दर्या व समुद्र, झरने, हवा पानी, पेड़, पौदे, जंगल व पहाड़, निजीर्व और बनस्पतियां, जानवर, पक्षी और जंगल में मंगल के सुगम दृष्य से जहां अल्लाह की बेहतरीन कारी गरी और उसकी महान शक्ति स्पष्ट है वहीं यह चीज़ें और तत्व यह सन्देश देते हैं कि अल्लाह ने इन्हें यूं ही और बेकार नहीं पैदा किया है बल्कि इन सब को वजूद में लाने का एक खास मक़सद है और वह यह है कि चन्द दिनों की ज़िन्दगी में इन्सान अपने खालिक़ व मालिक का शुक्रगुज़ार बन्दा बन कर रहे अपने पालनहार, स्वामी और रोज़ी देने वाले की इबादत करे, उसकी ज़ात व सिफ़ात में किसी को साझीदार न बनाए। वह संसार की चीज़ों से फायदा तो उठाये लेकिन

उसे अपने वजूद का मक़सद याद रहे और उसके पैगम्बरों और आखिरी सन्देष्टा के द्वारा बताई गई राह पर अग्रसर रहे। वह नेमतों पर इतराये नहीं, दौलत पर घमण्ड न करे, सत्ता के नशे में चूर हो कर अल्लाह की सृष्टि पर अत्याचार के पहाड़ न तोड़े। अन्याय, शोषण और धोका ध ाड़ी न करे, अपने जैसे इन्सानों के साथ प्रेम का मामला करे। अल्लाह की अन्य सृष्टि के साथ दया व करूणा से पेश आये। अपने हमवतन भाइयों से मिल जुल कर रहे, सांप्रदायिक वैमनष्यता से बचे और हर छण अपने रब का जाप करता रहे। अच्छी बातों पर अमल करे बुरी बातों से दूर रहे। समाज व सूसाइटी में गलत काम हो रहा हो तो हिकमत व बुद्धिमत्ता से इसको रोकने का प्रयास करे। अम्न व कानून को अपने हाथ में न ले। देश व समुदाय में फितना व फसाद फैलाने से बचे, खुद अम्न व शान्ति के साथ रहे और दूसरों को भी अम्न व शान्ति के साथ रहने दे। खुद कानून का पालन करे और दूसरों को भी इसका पाबन्द बनाए। अगर कोई फसादी और अपराधी है तो उसकी सज़ा के लिये न्याय पालिका को काम करने दें पर्यावरण के सुरक्षा के लिये काम करे। प्रकृति के कानून को समझ कर बरते और जमीन में अल्लाह के कानून और अन्य अवस्था में किसी भी व्यवस्था के अनुसार ज़िन्दगी गुज़ारे। प्राकृतिक संसाधनों के इस्तेमाल में संतुलन से काम ले। यह सारी खूबियां इन्सान के अन्दर अपने स्वामी की इबादत से पैदा होती हैं और इबादत गुज़ार बन्दा फितरत व शरीअत के कानून का पाबन्द होता है इसलिये इन्सान को पैदा करने का एक मक़सद बयान किया गयाः

''मैं (अल्लाह) ने जिन्नात और इन्सानों को महज़ इसी लिये पैदा किया कि वह केवल मेरी इबादत करें'' (सूरे ज़ारियात-५६)

फरमायाः

''हमने जमीन व आसमान और उनके दर्मियान की चीज़ों को खेल के तौर पर पैदा नहीं किया बल्कि हमने उन्हें दुरूस्त तदबीर (उपाय) के साथ ही पैदा किया लेकिन उनमें से अधिकतर लोग नहीं जानते।'' (सूरे दुख़ान-३८-३९)

अल्लाह तआला ने मोमिन बन्दे को एक ज़िम्मेदार बन्दा बनाया है और उसे पाबन्द बनाया है कि अपनी मर्जी से कोई काम न करे, उसके सामने हमेशा यह बात रहनी चाहिए कि उसके हर अमल की बाज़पुर्स होगी और उसे हर अमल का हिसाब देना होगा। कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः

''क्या तुम यह गुमान किए हुए हो कि हमने तुम्हें यूं ही बेकार पैदा किया है और यह कि तुम हमारी तरफ लौटाए ही न जाओगे। अल्लाह तआला सच्चा बादशाह है वह बड़ी बुलन्दी वाला है, उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं वही बुजुर्ग अर्श का मालिक है'' सूरे मुमकिन ११५-११६)

इस हकीकत को एक हदीस में इस तरह बयान किया गया हैः

''इब्ने आदम के कदम उस वक़्त तक न हिल सकें गे जब तक कि उससे यह सवाल न कर लिया

जाए कि उसने अपनी आयु कहां गंवाई, अपने इल्म पर कितना अमल किया, माल कहां से कमाया और कैसे खर्च किया और अपने शरीर को कहां खपाया?'' (तिर्मिज़ी)

इबादत गुज़ार बन्दे को न सिर्फ अपनी ज़िन्दगी के मक़सद का ज्ञान होता है बल्कि वह दुनिया में प्रकट होने वाले तत्वों के अन्दर निहित हिक्मतों और रहस्यों से भी अवगत होता है और जिस का वह जगह जगह एतराफ भी करता है और रब की नेमतों का उठते बैठते शुक्रिया भी अदा करता है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है:

''जो अल्लाह तआला का जिक्र (जाप) खड़े और बैठे और अपनी करवटों पर लेटे हुए करते हैं और आस्मान व ज़मीन की पैदाइश में गौर व फिक्र करते हैं और कहते हैं ऐ हमारे परवरदिगार! तू ने यह बेफायदा नहीं बनाया। तू पवित्र है पस हमें आग के अज़ाब से बचा ले'' (सूरे आले इमरान-१६१)

इबादत भी वही कुबूल होगी। जिस पर अल्लाह और उसके रसूल की मुहर लगी होगी और अल्लाह के नज़दीक वही दीन व शरीअत विश्वसीय है जो दीने फितरत है और जिसे अल्लाह ने नाज़िल किया है। अल्लाह तआला ने पवित्र कुरआन में फरमाया:

''जो शख्स इस्लाम के सिवा और दीन तलाश करेगा, उसका दीन कुबूल न किया जाएगा और वह आख़िरत में नुकसान पाने वालों में होगा'' (सूरे आले इमरान-८५)

सफल वही है जो अपने जीवन के उददेश्य को सामने रखता है और अपने असल मकसद से गाफिल नहीं होता है। इससे मामूली कोताही नहीं बरतता है। प्रकृति के कानून से बगावत नहीं करता, इसलिये कि प्रकृति के कानून में हस्तक्षेप से फसाद व बिगाड़ पैदा होता है। अगर्चे इस्लाम एक व्यपाक विधान और पूर्ण रूप से शरीअत है जो सब के लिये समान रूप से लाभकारी है और मानव आधिकार और अम्न व शान्ति की गारन्टी देता है लेकिन इसके बावजूद हर देश, समाज, दीन धर्म कबीला व खानदान के कुछ सिद्धांत और कानून व व्यवस्था होते हैं जिनसे बगावत फितना व फसाद को जन्म देता है और इसे तरक्की के हज़ार दावों के बावजूद सभ्य व धार्मिक समाज में जंगल राज से परिभाषित किया जाये गा इसलिये अल्लाह की नेमतों से लाभान्वित होने के साथ-साथ अपने मकसद को नहीं भूलना चाहिए। अपने रब की खुशी को तलाश करने के साथ उसकी शुक्रगुज़ारी का जाप करते रहना चाहिए। कानून चाहे शरई हो या हमारे दोष या कोताही की सज़ा के लिये बनाये गये हों इसकी पाबन्दी होनी चाहिए। ''तुम में से हर कोई जिम्मेदार है और हर कोई अपनी ज़िम्मेदारी के बारे में जवाबदेह है'' पर कारबन्द रहना चाहिए। पूरी सृष्टि के अधिकारों को अदा करने की भावना रहनी चाहिए फिर तो आप का उठना बैठना, सोना जागना, रहन सहन सब अल्लाह के लिये हो जाए गा। आप का हर कर्म और आचरण संपूर्ण रूप से इबादत मानी जायेगी और आप एक कामयाब मुसलमान होने के साथ एक अच्छा शहरी और इन्सान भी कहलाएंगे।

अल्लाह की तसबीह बयान करें

मौलाना खुर्शीद आलम मदनी

ज़िकरे इलाही (अल्लाह का जाप करने) का अर्थ बड़ा व्यापक है यह केवल तसबीह, तहमीद और तकबीर व तहलील तक सीमित नहीं है हमें इसकी व्यापकता को समझना चाहिए। इसकी विभिन्न अवस्थाओं को अपने जेहन व दिमाग में उतारना चाहिए और इस की फज़ीलतों को जानने की कोशिश करनी चाहिए ताकि हमारे शौक में ज़्यादा से ज़्यादा बढ़ोतरी हो और जिक्र जैसी प्रिय इबादत को सहीह अन्दाज़ से अदा करें और अल्लाह के क़रीब होने के पात्र बन जायें।

अल्लाह के जिक्र (जाप) का एक अर्थ यह है कि बन्दा अल्लाह के आदेशों को, उसकी मना की हुई चीज़ों को याद करे कि हमें अल्लाह ने तो यह हुक्म दिया है और इन चीज़ों से मना किया है। अल्लाह ऐसे आमाल को पसन्द करता है और ऐसे आमाल को नापसन्द करता है वह क्रय विक्रय का इस तरह हुक्म देता है और निकाह व तलाक़ वगैरह के बारे में यह फरमाता है। जैसा कि मश्हूर ताबई अता अल खुरासानी रह० फरमाते हैं ''ऐसी सभाएं भी ज़िक्र की हैं जिन में हलाल और हराम का उल्लेख हो। यह बताया जाए कि आप क्रय विक्रय नमाज़ रोज़े निकाह और हज वगैरह कैसे करेंगे।''

अल्लाह की याद के अर्थ में यह भी शामिल है कि हम अल्लाह के आदेशों और उसकी मना की हुई चीज़ों को याद करके इस पर अमल भी करें। मिसाल के तौर पर एक शख्स अल्लाह के किसी हुक्म को सुनता है। मुअज्जिन की आवाज़ सुनते ही नमाज़ की तैयारी शुरू कर दे। इसी तरह जब उसे मालूम हो जाए कि अल्लाह ने सूद खाने से मना किया है अल्लाह के रसूल ने झूठी गवाही देने से मना किया है तो अल्लाह का जाप (जिक्र) यह है कि वह अपने मामलात को साफ और सूद की मिलावट से पवित्र करके और लाख प्रयासों और लाखों की लालच दी जाए तब भी वह झूठी गवाही देने के लिये तैयार न हो।

अल्लाह का जाप करने के कई तरीके हैं इनके माध्यम से हमें अल्लाह को याद करना है ताकि हमारा पालनहार भी हमें याद रखे। इन्सान के लिये इससे बड़ा दुर्भाग्य क्या हो सकता है कि उसका पालनहार उसे भूल जाये।

१. ''लाइलाहा इल्लल्लाह'' के अर्थ को सामने रख कर उसके तकाज़ों को पूरा करते हुए जुबान से अदा करना।

२. सबसे अफज़ल (सर्वश्रेष्ठ) जिक्र कुरआन की तिलावत है। कुरआन की तिलावत के साथ उसको समझना और इसके अनुसार अक़ीदा व अमल, आचरण व व्यवहार और मामलात को संवारना।

३. जो अज़कार (जाप) किसी वक़्त के साथ खास हैं जैसे सोते वक़्त, जागने पर, घर में दाखिल होने और निकलने पर, छींक आने और चांद पर नज़र पड़ने आदि। इनही औक़ात में इन दुआवों को पढ़ना।

४. कुछ ऐसी भी दुआएं हैं जिनको कभी भी पढ़ा जा सकता है इनको ज़्यादा से ज़्यादा पढ़ना। तसबीह, तहमीद, तहलील और तकबीर के बारे में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

ने फरमायाः''अल्लाह तआला को चार कलिमात बहुत पसन्द हैं १. सुबहानल्लाह २. अलहम्दुलिल्लाह ३. लाइलाहा इल्लल्लाह ४. अल्लाहो अकबर। इन में से किसी के साथ भी शुरू करने में कोई हर्ज नहीं है। (मुस्लिम २१३७)

सुबहानल्लाह सबसे महत्वपूर्ण जिक्र है कुरआन में इस शब्द का वर्णन ८० स्थानों पर किया गया है और बहुत सी सूरतों की शुरूआत इसी शब्द से हुई है।

पूरी कायनात अल्लाह की तसबीह बयान करती है। यह आसमान, जमीन, पहाड़, सूरज चांद, उसकी तमाम सृष्टि सब तसबीह में व्यस्त हैं। अल्लाह तआला ने कुरआन में फरमायाः

सातों आसमान और ज़मीन और जो मख़लूक़ात (सृष्टि) उन में पाये जाते हैं सभी उसकी पाकी बयान करते हैं और हर चीज़ उसी की हम्द व सना और पाकी बयान करने में व्यस्त है लेकिन तुम लोग उनकी तसबीह को नहीं समझते हो। वह निसन्देह बड़ा सहनशील बड़ा मआफ करने वाला है'' (सूरे इसरा-४४)

जब हम सुबहानल्लाह कहते हैं तो इसका मतलब यह होता है कि अल्लाह की ज़ात हर कमी, ऐब और साझेदारी से पवित्र है उसका कोई साझीदार नहीं, उसके जैसे, उसका हमपल्ला कोई नहीं, इस तरह उसकी तमाम पैदा की हुई चीज़ हर तरह की कोताही और कमियों से पवित्र है इसे यूं ही बेकार नहीं पैदा किया।

हदीस में तसबीह की बड़ी फज़ीलत बयान की गई है। अल्लाह के रसूल पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो शख्स दिन में सौ बार सुबहानल्लाही व बिहमदिही कहे उसके पाप मिटा दिये जाएंगे। अगर्चे समुद्र के झाग के बराबर हों। (सहीह मुस्लिम-२६९१)

अबू हुरैरह रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो शख्स सुबह को सौ बार सुबहानल्लाहिल अज़ीम व बी हम्दिही पढ़े और इसी तरह शाम को भी सौ बार पढ़े तो उसके बराबर सृष्टि में किसी का दर्जा नहीं हो सकता। (अबू दाऊद ५०९१)

इसी तस्बीह से जन्नत में वृक्षारोपण किया जा सकता है। पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मेराज की रात मेरी मुलाक़ात हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से हुई तो उन्होंने फरमायाः मुहम्मद! अपनी उम्मत को मेरा सलाम अर्ज़ कर दें और यह बता दें कि जन्नत की मिटटी पवित्र, पानी मीठा है और वह एक मैदान है इस में वृक्षारोपण (शजरकारी) सुबहानल्लाह, अलहमदुलिल्लाह व ला इलाहा इल्लल्लाहो वल्लाहो अकबर के ज़रिया की जा सकती है''

पवित्र कुरआन में तस्बीह को फरिश्तों का जाप बताया गया हैः

''और फरिश्ते अपने रब की पवित्रता और उसकी तारीफ बयान करते हैं और ज़मीन में रहने वाले (अहले ईमान) के लिये मग्फिरत तलब करते हैं'' (सूरे शूरा-५) इस लिये हमें ज़्यादा से ज़्यादा तसबीह, तहलील, जिक्र व अज़्कार करना चाहिए। यह बड़ा आसान अमल है इसके लिये वजू और किबला की तरफ रूख करना ज़रूरी नहीं आर्थिक सदका भी नहीं, बल्कि यह हमारी कामयाबी का सबब है। कुरआन में अल्लहा तआला ने फरमायाः ''और अल्लाह को खूब याद करो ताकि तुम कामयाब रहो'' (सूरे अंफाल-४५)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इबादतें

आसिफ तनवीर तैमी

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने प्यारे सहाबा से फरमायाः बेशक मैं तुम में सबसे ज़्यादा अल्लाह से डरने वाला हूं। (सहीह बुखारी-५०६३)

जब पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से आप की इबादत की अधिकता के बारे में पूछा गया जब कि अल्लाह ने आपके तमाम गुनाहों को मआफ कर दिया है तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

''क्या मैं अल्लाह का शुक्रगुज़ार बन्दा न बनूं'' (सहीह बुखारी-२८१६)

आइशा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इबादतों के बारे में फरमाती हैं :

''अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कभी पूरी-पूरी रात खड़े और कभी बैठकर नमाज़ पढ़ते, ताक़त से ज़्यादा काम का अपने आप पर बोझ नहीं डालते। आयु और शारीरिक ताकत के एतबार से अमल करते, जब आप का शरीर भारी हो गया तो बैठकर नमाज़ पढ़ते। (सहीह मुस्लिम-११६)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की रात की इबादतों के बारे में अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहो अन्हुमा बयान करते हैंः

एक बार आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी खाला मैमूना के घर रात बिताई, मैं बिस्तर की चौड़ाई में और आप इसकी लम्बाई में सो गये। आधी रात या इससे कुछ पहले आप उठे, आले इमरान की आखिरी दस आयतें पढ़ीं, बरतन का पानी उठाया और अच्छी तरह वज़ू करके नमाज़ में व्यस्त हो गये। अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं मैं भी आप के बराबर में खड़ा हो गया। आप ने १२ रकात नमाज़ पढ़ी फिर वित्र पढ़ कर सो गये मुअज़्ज़िन ने फज्र की अज़ान दी, आप ने फज्र की दो रकात सुन्नत अदा की और इसके बाद फर्ज़ नमाज़ पढ़ी। (सहीह मुस्लिम-७७३)

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कुरआन करीम की आयतों को खींच कर और ठेहर कर पढ़ते कुरआन पढ़ने के दौरान आप की आंखों से आंसू जारी हो जाता, रोने की आवाज़ भी आती। अब्दुल्लाह बिन अल शिख्खीर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं मैं आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आया, आप नमाज़ में व्यस्त थे, आप के रोने की आवाज़ उसी तरह आ रही थी जैसे हांडी में पानी उबाल खाता है। (सुनन नेसई १२१४ अल्लामा अलबानी ने इस हदीस को सहीह करार दिया है।

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कुरआन की तिलावत पाबन्दी से करते थे। आप स्वयं भी तिलावत करते और अपने सहाबा से भी तिलावत सुनते थे। खास तौर से उबय बिन काब, अब्दुल्लाह बिन मसऊद और अबू मूसा अश्अरी रज़ियल्लाहो अन्हुम जो कुरआन करीम को खूबसूरत अन्दाज़ में पढ़ते थे इन सहाबा किराम रज़ियल्लाहो अन्हुम से आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कुरआन की तिलावत सुनते थे। अब्दुल्लाह बिन मसऊद

रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का बयान है:

''मुझ से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कहा कि मुझे कुरआन पढ़ कर सुनाओ, तो मैंने कहा मैं आपको सुनाऊं और आप पर ही नाज़िल हुआ है? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कहाः हां, मैं दूसरों से कुरआन सुनना पसन्द करता हूं, मैंने सूरे निसा पढ़ना शुरू किया यहां तक कि जब मैं इस आयत ''फकैफा इज़ा जेना मिन कुल्ली उम्मतिम बी शहीदिंव् व जेना बिका अला हाउलाई शहीदा'' (४१) पर पहुंचे तो आपने कहा कि अब रहने दो। मैं ने देखा कि आप की आखों से आंसू जारी था'' (सहीह बुखारी-११४)

ऐसे ही आप अन्य सहाबा से भी पवित्र कुरआन सुना करते थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने घर में नफली नमाज़ें पढ़ते और फर्ज़ नमाज़ें सहाबा किराम के साथ मस्जिद में अदा किया करते थे जब आप से घर और मस्जिद में नमाज़ के बारे में पूछा गया तो कहा ''मेरे घर और मस्जिद की दूरी बहुत कम थी, मुझे फर्ज नमाज़ के सिवा घर में नमाज़ पढ़ना ज़्यादा पसन्द है।'' (सुनन अबू दाऊद-६१६)

पांचों वक़्त की नमाज़ें मस्जिद में जमाअत के साथ पढ़ने के बड़े फायदे हैं। गांव मोहल्ले के लोग इस अवसर पर एकटठा हो जाते हैं जिसकी वजह से एक दूसरे से परिचत और हाल चाल जानने का मौका मिल जाता है। भलाई के कामों में एक दूसरे के मददगार और सहायक बनते हैं। मस्जिद में जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ने का सवाब अकेले नमाज़ पढ़ने की अपेक्षा २७ गुना ज़्यादा मिलता है। घर में नफली नमाज़ पढ़ने से घर के अन्य लोग भी शामिल हो जाते हैं।

आइशा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा से जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के प्रिय अमल के बारे में पूछा गया तो उन्होंने फरमायाः

''आप के नजदीक प्रिय अमल वह था जिसको बराबर किया जाए अगरचे वह अमल थोड़ा हो'' (मुख्तसर अश्शमाइल) लेखकः अल्लामा अलबानी रह० पृष्ठ १४५/१६४)

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इबादतें विभिन्न प्रकार की होती थीं। आप नमाज़ भी पढ़ते, रोज़े भी रखते, जिक्र व अज़कार करते, शिक्षा एवं प्रशिक्षण का कर्तव्य भी निभाते थे।

औफ बिन मालिक रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं:

''मैं एक रात आपके साथ था आप ने मिस्वाक के बाद वज़ू किया और नमाज़ के लिये खड़े हो गये मैं भी आप के साथ पढ़ने लगा। आप ने सूरे बक़रा की क़िरत की। रहमत की आयत से गुज़रते तो अल्लाह से रहमत की मांग करते। अज़ाब की आयत से गुज़रते तो अल्लाह से पनाह मांगते फिर आपने रूकू किया, क़्याम के बराबर रूकू में रहे। रूकू में आप ने कहा :

''सुब्हाना जिल जबरूती वल मलकूती वल किबरियाई वल अजमती (पवित्र है वह जात जो गलबा वाला, बादशाहत वाला, और महानता वाला है) फिर आप ने रूकू के बराबर सजदा किया और सजदे में रूकू की दुआ की फिर आप ने सूरे आले इमरान की और लगतार कई सूरतों की तिलावत की। (सुनन नेसई २२३)

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ज़्यादा से ज़्यादा रोज़ा रखते थे। अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं किसी

महीने में आप रोज़ा नहीं रखते थे यहां तक कि हमें गुमान होता कि आप इस महीने में रोज़ा ही नहीं रखेंगे और जब रोज़ा रखते तो महसूस होता कि आप रोज़ा बिल्कुल नहीं छोड़ेंगे आप रात में नमाज़ भी पढ़ते और सोते भी (सहीह बुखारी-४६)

आप सोमवार और वीरवार को रोज़ा रखने की पूरी कोशिश करते। आप ने इन दोनों दिनों में रोज़ा रखने का सबब भी बयान किया।

''सोमवार और वीरवार को आमाल अल्लाह के सामने पेश किये जाते हैं और मैं चाहता हूं कि जब मेरे आमाल पेश किये जायें तो मैं रोज़े की हालत में रहूं।'' (सुनन तिर्मिज़ी-२२७)

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की रातों की इबादतों के बारे में हज़रत आइशा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा बयान करती हैं कि ऐ अल्लाह के रसूल! आप वित्र पढ़े बगैर सोते हैं? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया ''ऐ आइशा! मेरी आंखें सोती हैं लेकिन मेरा दिल जगा रहता है'' (सहीह बुखारी-४/४७,४८) यह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की विशेषताओं में शामिल है कि आप हर वक़्त जिक्र व अज़कार में व्यस्त रहते थे। सोते भी तो कहते ''ऐ मेरे रब मैंने तेरे नाम के साथ अपना पहलू रखा और तेरे नाम के साथ ही इसे उठाऊंगा अगर तू मेरी जान को रोक ले तो इस पर दया फरमा और अगर तू ने इसे छोड़े दिया तो इसकी हिफाज़त फरमा जिस तरह तू अपने नेक बन्दों की हिफाज़त करता है। (बुखारी ७/१४६)

जब आप नींद से बेदार होते तो कहते ''अल हमदुलिल्लाहिल लज़ी अहयाना बादा मा अमातना व इलैहिन नुशूर'' (तमाम तारीफात उस अल्लाह के लिये हैं जिस ने हमें मरने के बाद जीवित किया और उसी की तरफ लौट कर जाना है (सहीह बुखारी ७/१४७)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हर रात सोने से पहले अपनी दोनों हथेलियों को एकटठा करके सूरे इख्लास, सूरे फलक और सूरे नास पढ़ कर उन पर फूंक मारते फिर सर चेहरे और शरीर के सामने से शुरू करते हुए पूरे बदन पर फेरते इस तरह तीन बार करते। (सहीह बुखारी ६/१०६)

इस्लाहे समाज
खरीदारी फार्म

पत्रिका को घर पर मंगवाने के लिये अपने पते में निम्न विवरण ज़रूर लिखें।

नाम.....

पिता का नाम.....

स्थान.....

पोस्ट आफिस.....

वाया.....

तहसील.....

जिला.....

पिन कोड.....

राज्य का नाम.....

मोबाइन नम्बर.....

अपना मनी आर्डर इस पते पर भेजें।

आफिस का पताःअहले हदीस मंज़िल 4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद दिल्ली-6

बैंक और एकाउन्ट का नामः

Markazi Jamiat Ahle Hadees Hind

A/c No. 629201058685 (ICICI Bank) Chani Chowk, Delhi-6

RTGS/NEFT/IFSC CODE ICIC0006292

नोटः-बैंक द्वारा रक़म भेजने से पहले आफिस को सूचित करें।

अच्छे लोगों की संगत

मौलाना अब्दुल मन्नान शिकरावी

बेहतरीन लोगों की संगत अपनाना अच्छे लोगों की पहचान है। इस्लाम धर्म हमें सिखाता है कि हमें अच्छे और नेक लोगों की संगत में रहना चाहिए। अच्छे लोगों की संगत का मतलब यह है कि आप ईमान वालों के दोस्त और मानवता के शुभचिंतक हैं। यह इस्लाम की बुनियादी शिक्षा है। एक मुसलमान को चाहिए कि वह अल्लाह के इस फरमान को हमेशा जेहन व दिमाग में रखे।

''और उस दिन जालिम शख्स अपने हाथों को चबा-चबा कर कहेगा हाए काश कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की राह अख्तियार की होती हाय अफसोस काश कि मैंने फलां को दोस्त बनाया न होता। उसने तो मुझे इसके बाद गुमराह कर दिया कि नसीहत मेरे पास आ चुकी थी। और शैतान तो इन्सान को (वक़्त पर) दग़ा देने वाला है'' (सूरे अल फुरक़ान -२७-२६)

हज़रत अलक़मा रह० फरमाते हैंः ऐसे लोगों के साथ रहो कि उनकी संगत तुम्हारे फायदे का सामान बन जाए, अगर तुम भुकमरी का शिकार हो जाओ तो वह तुम्हारी मदद करें, तुम्हारे मुंह से कोई गलत बात निकल जाए तो वह इसकी इस्लाह कर दें अगर वह तुम्हारे अन्दर कोई नेकी देखें तो इसकी प्रशंसा करें अगर उनसे कभी कुछ मांगने की नौबत आ जाए तो मना न करें और अगर कोई परेशानी हो जाए तो तुम्हें सांत्वना और तसल्ली दें (बह्जतुल मजालिस)

बाज़ ओलमा का कथन हैः दो आदमियों में से एक की संगत अपनाओ। एक तो वह आदमी जिससे आप दीन के बारे में कोई बात सीख सकें कि जिससे आप को भायदा हो। दूसरा वह शख्स कि तुम उसे कुछ सिखाओ तो वह इसे कुबूल करके अमल करे। इन दोनों के अलावा जो भी हो, उससे दूर भागो। (इहयाओ उलूमिददीन)

मुहम्मद बिन वासे रह० फरमाते हैंः ''दुनिया में जमाअत के साथ नमाज़ और भाइयों की मुलाकात से ज़्यादा कोई लज़्ज़तदार चीज़ नहीं बची है।'' (हिलयतुल औलिया)

मालिक बिन दीनार रह० फरमाते हैं ''दुनिया की रूह में से सिर्फ तीन चीज़ें बची हैं, भाइयों से मुलाक़ात, तहज्जुद में कुरआन की तिलावत और खाली घर जिसमें अल्लाह का जिक्र (जाप) किया जाए। (किताबुल इख़्वान, लेखकः इब्ने अबुद दुनिया)

हज़रत सईद बिन मुसैइब रह० फरमाते हैंः सहाब-ए-किराम में से बाज़ मेरे भाइयों ने मुझे लिखा कि सच्चे दोस्तों की संगत अपनाओ क्योंकि वह खुशहाली में तुम्हारे लिये फायदामन्द और बड़ी मुसीबत के दिनों में लाभकारी साबित होंगे। (शोबुल ईमान)

अबू दरदा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अगर क्यामुल्लैल (रात की नमाज़) और अच्छे लोगों की संगत न होती तो मैं दुनिया में रहना पसन्द नहीं करता। (मवारिदुज जमआन)

हज़रत अबू मूसा अश्अरी रज़ियल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अच्छे और बुरे साथी की मिसाल खुश्बू बेचने वाले और भटठी झोंकने वाले जैसी है। मुश्क (खुश्बू) बेचने वाला या तो तुझे (तोहफे के तौर पर सूंघने के लिये) यूं ही दे देगा या तू उससे खरीद लेगा या तू उससे अच्छी खुश्बू पाये गा और भटठी भूंकने वाला या तो तेरे कपड़े जला देगा या बुरी बू तुझ को सूंघनी पड़ेगी।'' (सहीह बुखारी-सहीह मुस्लिम)

नेक लोगों की संगत के फायदेः नेक लोगों के साथ बैठने से गुनाह मआफ हो जाते हैं जैसा कि सहीह बुखारी और सहीह मुस्लिम में हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया बेशक अल्लाह के कुछ फरिश्ते रास्तों में घूमते रहते हैं और जिक्र (जाप) करने वालों को ढूंढते फिरते हैं वह जब अल्लाह का जिक्र करने वालों को पा लेते हैं तो पुकारते हैं अपनी ज़रूरतें मांगों। अबू हुरैरह रज़ियल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि वह उन्हें आसमाने दुनिया तक अपने परों से ढ़ाप लेते हैं तो उनसे उनका परवरदिगार पूछता है हालांकि वह खूब जानता है मेरे बन्दे क्या कर रहे हैं? हदीस के आख़िर में है कि अल्लाह फरमाता हैः मैं तुम्हें गवाह बना कर कहता हूं कि मैंने उन्हें मआफ कर दिया है। फरिश्ते कहते हैं उनमें एक बन्दा गुनेहगार है जो वहां से गुज़र रहा था तो उनके साथ बैठ गया। अल्लाह तआला फरमाये गा उनके साथ बैठने वाला बदनसीब नहीं होगा यानी वह भी मग्फिरत और रहमत का हक़दार होगा।

नेक लोगों की संगत करने से शरीअत का ज्ञान प्राप्त होता और अज्ञानता खत्म होती है, इसी तरह एक नई राह मिल जाती है जिस पर चल कर इन्सान कामयाब हो जाता है। नेक लोगों के साथ रहने से शरीअत का ज्ञान हासिल करने की हिम्मत और हौसला मिलता है। हलाल और हराम का अन्तर मालूम होता है, दीन की समझ हासिल होती है और नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत की समझ आती है।

नेक लोगों की संगत से इबादत का हौसला मिलता है। नेक लोगों के नवाफिल को देख कर नवाफिल को अदा करने का शौक पैदा हो गा इसी तरह रोज़ा रखने का जज़बा पैदा होगा।

अल्लाह तआला की तरफ दावत के काम में एक दूसरे का सहयोग मिलेगा और दावत के तरीकों और रहस्य से अवगत होने का अवसर मिलेगा।

बेराहरवी से हिफाज़त होगी। अच्छी बातों का हुक्म देने और बुरी बातों से रोकने का मौक़ा मिलेगा।

नेक साथी आप की खामियों और ऐबों को चिन्हित (निशानदेही) करे गा और आप को आप की कमजोरियों को बताए गा इसी तरह अल्लाह के रसूल (पैगम्बर) मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुसलमान को मुसलमान के लिये एक दर्पण की हैसियत से परिचित कराते हुए फरमाया है ''मुसलमान अपने भाई का दर्पण (आइना) है'' (सुनन अबू दाऊद)

''इमाम हसन रह० फरमाते हैंः मुसलमान अपने भाई का आईना (दर्पण) है अगर उसमें कोई अप्रिय बात नज़र आती है तो वह इसको दुरूस्त कर देता है और मौजूदगी और गैर मौजूदगी दोनों सूरतों में

उसकी हिफाज़त करता है।'' (किताबुल इख्वान, लेखक इब्ने अबुद दुनिया)

नेक साथी के माध्यम से आप को आपके अकीदे (आस्था) और बातचीत में होनी वाली हर गलतियों की जानकारी हो गी।

अच्छा साथी आप को भलाई की बातें बताए गा और आप की जिम्मेदारियों का एहसास दिलाए गा।

नेक लोगों की संगत अपनाएं गे तो ज्ञान, इबादत, और चरित्र में उनके उच्च स्थान से अवगत होंगे और इससे आपको दो प्रकार का फायदा होगा।

१. अगर अपने से बेहतर लोगों को देखेंगे तो आप की खुद पसन्दी (स्वयं को ज़्यादा अच्छा समझने) का एहसास खत्म हो जाए गा।

२. अच्छे कामों के करने का शौक पैदा होगा। इसी लिये हज़रत उस्मान बिन हकीम रह० कहा करते थे ऐसे लोगों की संगत अपनाओ जो दीन में तुम से ऊपर हों लेकिन दुनिया में कमतर। (किताबुल इख़्वान लेखक, इब्ने अबुददुनिया)

नेक लोगों की संगत का एक फायदा यह भी है कि आप को ज़िन्दगी में उनकी दुआ मिलने के साथ साथ मरने के बाद भी उनकी दुआएं मिलती रहेंगी। क्योंकि नेक लोगों की यह आदत होती है कि वह अपनी संगत में रहने वालों को कभी नहीं भूलते।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मर्द मुसलमान की अपने भाई के लिये गायबाने में दुआ कुबूल होती है। उसके सिरहाने एक फरिश्ता तैनात होता है जब भी वह अपने भाई के लिये दुआ करता है तो वह फरिश्ता आमीन कहता है। (सहीह मुस्लिम)

हज़रत उबैदुल्लाह बिन हसन रह० का कथन हैः ज़्यादा से ज़्यादा दोस्त बनाओ क्योंकि इसका कम से कम यह फायदा होगा कि जब तुम्हारी वफात (निधन) की खबर उनको मिलेगी तो वह अवश्य तुम्हारे लिये मग्फिरत की दुआ करेंगे।

अल्लाह के लिये किसी के पास बैठना, दोस्ती करना और उसकी खातिर किसी से मिलने के लिये जाना यह अल्लाह की मुहब्बत का माध्यम है। हदीस कुदसी में है ''मेरी खातिर दो मुहब्बत करने वालों, मेरे लिये साथ बैठने वालों, मेरी खातिर मिलने के लिये जाने वालों और मेरी खातिर खर्च करने वालों के लिये मेरी मुहब्बत वाजिब होगी (मुवत्ता इमाम मालिक, सहीहुल जामे)

नेक लोगों के पास बैठने का एक फायदा यह भी है कि इससे अल्लाह की खातिर मुहब्बत में बढ़ोतरी होती है। हदीस शरीफ में है कि क्यामत के दिन जिस दिन अल्लाह के क्षांव के अलावा कोई छांव नहीं होगा अल्लाह की खातिर दो मुहब्बत करने वालों को उसका छांव नसीब होगा।

नेक लोगों की संगत से त्याग और बलिदान जैसी इस्लामी आचरण की प्राप्ति का माध्यम भी है। नेक लोगों की संगत से लिखने, बोलने, परिचर्चा एवं शोध, मामले को समझने और ज्ञान की योग्यताएं निखरती हैं और दूसरों की सेवा की भावना पैदा होती है। सारांश यह है कि नेक लोगों की संगत के बड़े फायदे हैं इसके माध्यम से एक इन्सान उच्च आचरण और स्वभाव का मालिक हो जाता है और दुनिया और आखिरत में सौभाग्य प्राप्त होता है। अल्लाह तआला हम सभी को नेक लोगों की संगत अपनाने की क्षमता दे। आमीन

इस्लाम में समता और न्याय का अधिकार

मौलाना अज़ीज़ अहमद मदनी

मानव अधिकार में एक अधिकार समता अर्थात बराबरी का भी है यह इस्लाम के मूल्यों की व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण और मजबूत पहलू है। इस्लाम की गिनाह में तमाम इन्सान मानवता के एतबार से बराबर का स्थान रखते हैं। रंग, नस्ल, राष्ट्र और भाषा व क्षेत्र आदि किसी खास पहचान और अन्तर के सबब किसी को वरियता देना इस्लामी शिक्षाओं के विपरीत है, जबकि योग्यता, संकल्प, एरादे और माल व दौलत आदि के एतबार से इन में स्पष्ट अन्तर पाया जाता है। इस्लाम केवल परहेज़गारी के आधार पर विशिष्टता और वरियता देता है जैसा कि कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता हैः

'' अल्लाह के नज़दीक तुम सब में से बाइज़्ज़त वह है जो सबसे ज़्यादा डरने वाला है'' (सूरे हुजुरात-१३)

इन्सान को समता व न्याय के अध्याय में इस्लाम के पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का आखिरी हज के अवसर पर दिया गया अभिभाषण एक बेहतरीन और महत्वपूर्ण मार्गदर्शक की हैसियत रखता है।

अल्लाह तआला ने कथनी करनी और मामलात में पादरर्शिता, मध्यमार्ग और न्याय से काम लेने पर जोरि दिया है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता हैः बेशक अल्लाह तआला अद्ल (समता) का, भलाई का व्यवहार करने का हुक्म देता है। (सूरे नह्ल-९०)

पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः दो लोगों के बीच न्याय करना नेकी का काम है (सहीह मुस्लिम-१००९)

इस्लाम धर्म मुसलमान ही नहीं बल्कि गैर मुस्लिम भाईयों के बीच भी न्याय और समता स्थापित करने का हुक्म देता है जैसा कि कुरआन में है ''और जब लोगों का फैसला करो तो अद्ल व इन्साफ से फैसला करो!'' (सूरे निसा-५८)

गैर मुस्लिमों के साथ अच्छा व्यवहार करने, हमदर्दी और उदारता का मामला करने का आदेश और मार्गदर्शन करता है। कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः

''जिन लोगों ने तुम से दीन के बारे में लड़ाई नहीं लड़ी और तुम्हें जिला वतन नहीं किया उनके साथ सुलूक और एहसान करने और न्यायपूर्ण भले बर्ताव करने से अल्लाह तआला तुम्हें नहीं रोकता बल्कि अल्लाह तआला तो इन्साफ करने वालों को दोस्त रखता है'' (सूरे मुमूतहिना-८)

इसी तरह से ऐसे लोग नागरिक आधार पर नागरिक आज़ादी और बुनियादी अधिकार में मुसलमानों के बराबर शरीक होंगे। इस्लामी कानून की नज़र में सबके साथ समान मामला किया जाएगा। (विवरण के लिये देखें ''इस्लामी हुकूमत में गैर मुस्लिमों के अधिकार'')

पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जीवन के शिष्टाचार

अब्दुर्रहमान अश-शीहा

१. पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने साथियों से निकट और मिल जुल कर रहते थे। इसकी पुष्टि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के जीवन के तमाम विभागों और आप के सारे निजी और सामान्य मामलों की पूरी जानकारी प्राप्त करने से होती है। इसलिए कि पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ही वह आदर्श और नमूना हैं जिनकी तमाम मामलों में पैरवी और अनुसरण करना चाहिए। जरीर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं जब से मैं इस्लाम लाया हूं पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे अपने पास आने से नहीं रोका, और जब भी मुझे देखा तो मुसकुरा दिया, मैंने आपसे शिकायत की कि मैं घोड़े पर स्थिर नहीं रह पाता हूं तो आप ने अपने हाथ से मेरे सीने पर मारा और यह दुआ कीः

''ऐ अल्लाह तू इसे स्थिर कर दे और इसे मार्ग दर्शाने वाला और मार्ग दर्शाया हुआ बना।'' (सहीह बुख़ारी और सहीह मुस्लिम)

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने साथियों के साथ हंसी-मज़ाक और चुहल किया करते थे, अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम लोगों में सबसे अच्छे अख्लाक़ वाले थे, मेरा एक भाई था जिसे अबू-उमैर कहा जाता था, (हदीस के बयान करने वाले) कहते हैंः मेरा ख्याल है कि अनस ने कहा कि वह छोटे थे, अनस कहते हैंः जब पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आते और उनको देखते तो कहते ''ऐ अबू-उमैर, तुम्हारी चिड़िया क्या हुई।'' वह कहते हैं इस तरह आप उनके साथ खेलते थे। (सहीह बुख़ारी और सहीह मुस्लिम)

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हंसी-मज़ाक केवल बात चीत पर बस नहीं थी बल्कि आप अपने साथियों के साथ अमली तौर पर (क्रियात्मक रूप से) हंसी-मज़ाक और चुहल किया करते थे। अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि एक देहाती आदमी जिसका नाम ज़ाहिर बिन हराम था पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को उपहार (तोहफा) दिया करता था, जब वह वापस जाना चाहता तो पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसके लिए कोई चीज़ तैयार करते थे। पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनके बारे में कहा ''ज़ाहिर हमारे देहाती और हम उनके शहरी (साथी) हैं।'' अनस कहते हैं, एक दिन वह अपना सामान बेच रहे थे कि पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आये और उनके पीछे से उन्हें पकड़ लिया और वह आप को देख नहीं पा रहे थे। चुनांचे उन्होंने कहाः यह कौन है? मुझे छोड़ दे। आप ने अपना चेहरा उनकी ओर किया, जब वह पहचान गए कि यह पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं तो अपनी पीठ

को आपके सीने से चिपकाने लगे। पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः ''यह गुलाम कौन खरीदेगा?'' ज़ाहिर ने कहाः ऐ अल्लाह के पैग़म्बर आप मुझे सस्ता पाएंग। आप ने फरमायाः ''किन्तु तुम अल्लाह के निकट सस्ते नहीं हो'' या फरमायाः ''किन्तु तुम अल्लाह के पास बहुमूल्य हो'' (सहीह इब्ने हिब्बान)

२. अपने साथियों से परामर्श करनाः जिन चीज़ों के विषय में कोई नस (यानी अल्लाह की ओर से कोई स्पष्ट प्रमाण) नहीं होता था, पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उन तमाम मामलों में अपने साथियों से सलाह-मश्वरा (परामर्श) किया करते थे और उनके विचार को स्वीकार करते थे। अबु हुरैरह रज़ियल्लाहो अन्हु कहते हैंः मैंने अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बढ़कर किसी को भी अपने साथियों से सलाह-मश्वरा करते हुए नहीं देखा। (सुनन तिरमिज़ी)

३. बीमार की तीमार दारी करना चाहे वह मुसलमान हो या गैर मुस्लिमः पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने साथियों के बारे में पूछते और उनकी ख़बरगीरी किया करते थे। अगर आप को बताया जाता कि कोई बीमार है तो आप और आपके पास उपस्थित सहाबा उसकी तीमार दारी के लिए दौड़ पड़ते थे। आप केवल मुसलमान बीमारों की ही तीमारदारी नहीं करते थे बल्कि उनके अतिरिक्त दूसरे लोगों की भी तीमार दारी किया करते थे। अनस रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैंः एक यहूदी बच्चा पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा किया करता था, वह बीमार पड़ गया तो पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसकी तीमार दारी करने के लिए गये, उसके सिरहाने के पास आप बैठ गये और उससे कहा ''तू इस्लाम ले आ'' उसने अपने पास बैठे हुए अपने बाप की ओर देखा, तो उसके बाप ने कहाः अबुल-क़ासिम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बात मान ले, चुनांचे वह मुसलमान हो गया, फिर आप वहां से यह कहते हुए निकले ''सभी तारीफ अल्लाह के लिए है जिस ने उसे आग से बचा लिया।'' (सहीह बुख़ारी)

४. पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भलाई का शुक्रिया अदा करते थे और उसका अच्छा बदला देते थेः आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का फर्मान हैः

''अगर कोई तुम से अल्लाह के वास्ते पनाह मांगे तो उसे पनाह दे दिया करो, और जो तुम से अल्लाह के नाम से कोई चीज़ मांगे तो उसे प्रदान कर दिया करो, और जो तुम्हें आमंत्रण दे उसके आमंत्रण को स्वीकार करो, और जो तुम्हारे साथ कोई भलाई करे तो उसका बदला दो, अगर तुम्हारे पास उसको बदला देने के लिए कोई चीज़ न हो तो उसके लिए दुआ करो यहां तक कि तुम जान लो कि तुम ने उसका बदला पूरा कर दिया।'' (सुनन अबू दाऊद)

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बीवी आइशा रज़ियल्लाहो अन्हा आप के बारे में फरमाती हैंः अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तोहफा स्वीकार करते थे और उसका बदला भी देते थे। (सहीह बुखारी) यानी बदले में आप भी तोहफा देते थे।

५. पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हर सुंदर और बढ़िया चीज़ को पसंद करते थेः

अनस रज़ियल्लाहो अन्हु कहते हैं मैंने कोई हरीर और दीबा नहीं छुआ जो पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हथेली से अधिक कोमल हो और न कभी कोई ऐसी खुश्बू सूंघी जो पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की खुश्बू से अधिक बढ़िया हो। (सहीह बुख़ारी और सहीह मुस्लिम)

६. पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भलाई और नेक काम के हर मैदान में सिफारिश करना पसंद करते थेः इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अहुम्मा बयान करते हैं कि बरीरा के पति एक गुलाम थे जिनका नाम मुगीस था, गोया मैं उन्हें देख रहा हूं कि वह उसके पीछे-पीछे रोते हुए चल रहे हैं और उनके आंसू उनकी दाढ़ी पर बह रहे हैं। यह देख कर पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अब्बास से कहाः ऐ अब्बास! क्या आप को इस बात से आश्चर्य नहीं होता कि मुग़ीरा किस तरह बरीरा से टूट कर प्यार करते हैं और बरीरा किस तरह मुग़ीस से नफरत करती हैं? फिर पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने (बरीरा से) कहाः ''अगर तू उसके पास लौट जाती'' उसने कहा ऐ अल्लाह के पैग़म्बर! क्या आप मुझे हुक्म दे रहे हैं? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः ''मैं सिफारिश कर रहा हूं'' उसने कहाः मुझे उनकी कोई ज़रूरत नहीं। (सहीह बुखारी)

७. पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपनी सेवा स्वयं करते थेः आइशा रज़ियल्लाहो अन्हा से जब पूछा गया कि पैगम्बर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने घर में क्या करते थे? तो उन्होंने बतायाः आप मनुष्यों में से एक मनुष्य थे, अपने कपड़े धोते, अपनी बकरी दूहते और अपनी सेवा करते थे। (सहीह इब्ने हिब्बान)

बल्कि आप के अख्लाक़ की शराफत और बड़ापन केवल अपनी सेवा आप तक ही सीमित नहीं था बल्कि आप दूसरों की भी सेवा किया करते थे। आपकी पत्नी आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से जब पूछा गया कि पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने घर में क्या किया करते थे? तो उन्होंने ने कहाः आप अपने घर वालों की सेवा में लगे रहते थे, जब अज़ान सुनते तो नमाज़ के लिये निकल जाते। (सहीह बुख़ारी)

(प्रेस रिलीज़)

जुमादल ऊला 1443 हिजरी का चाँद नज़र नहीं आया

दिल्ली ५ दिसंबर २०२१

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की मर्कज़ी अहले हदीस रूयते हिलाल कमेटी दिल्ली से जारी अखबारी बयान के अनुसार आज २९ रबीउल आखिर १४४३ हिजरी अनुसार ५ दिसंबर २०२१ रवीवार मग्रिब की नमाज के बाद अहले हदीस कम्पलैक्स ओखला नई दिल्ली में मर्कज़ी अहले हदीस रूयते हिलाल कमेटी दिल्ली की एक महत्वपूर्ण मीटिंग आयोजित हुई जुमादल ऊला महीने के चांद को देखने के सिलसिले में यथापूर्व देश के अधिकांश राज्यों के जिम्मेदारों और मिल्ली संगठनों से फून के माध्यम से संपर्क किये गये मगर किसी राज्य से चांद देखने की प्रमाणित खबर नहीं मिली। इसलिये मर्कज़ी अहले हदीस रूयते हिलाल कमेटी दिल्ली ने यह फैसला लिया है कि दिनांक ६ दिसंबर २०२१ सोमवार को रबीउल आखिर १४४३ हिजरी की ३०वीं तारीख होगी। इन्शाअल्लाह

इस्लाम धर्म अम्न व शान्ति का झण्डावाहक

सईदुर्रहमान सनाबिली

इस्लाम दया करूणा और अम्न व शान्ति का धर्म है, इस्लाम ने सिसक्ती इन्सानियत को सुख और संतोष की दौलत दी। पीड़ित को उसका अधिकार दिया, अत्याचारी को अत्याचार से रोका, यतीमों, बेवाओं और मोहताजों की देख भाल की, परेशान हाल, अधिकार से वंचित, बीमार के साथ हमदर्दी मुहब्बत व सहायता और सांत्वना की शिक्षा दी, लड़ाई झगड़ों से मुक्ति दिलायी। इस्लाम ने एक निर्दोष इन्सान के कत्ल को पूरी मानवता के कत्ल के समान करार दिया है, दूसरों के साथ अच्छा व्यवहार करने का हुक्म दिया है। मुस्लिम और गैर मुस्लिम पड़ोसियों के अधिकार अदा करने और उनके समाजी मामलात में हमदर्दी और शुभचिंतन पर बल दिया है। अत्याचार को हर तरह से हराम करार दिया है। इस्लाम ने अपने अनुयाइयों को इस्लाम के प्रचार की इजाज़त तो दी है लेकिन धर्म के मामले में किसी पर जबरदस्ती करने पर रोक लगा दी है।

इस्लाम अम्न व शान्ति और सुलह समझौते का सबसे बड़ा वाहक है इसका अन्दाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि कुरआन ने ऐसे अल्लाह का तसव्वुर पेश किया है जो कृपालू और दयालू है और कुरआन ने ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० का परिचय इन शब्दों में कराया है ''और हमने आपको पूरे संसार के लिये दया आगार बना कर भेजा है'' इस्लाम ने बिना भेदभाव सबसे प्रेम का पाठ सिखाया है जिसमें कदम कदम पर अल्लाह से प्रेम, ईश्दूत हज़रत मुहम्मद से प्रेम, मुसलमानों से प्रेम, पूरी मानवता से प्रेम यहां तक कि अल्लाह की पूरी सृष्टि से प्रेम की शिक्षा दी गयी है।

इस लेख में उन यथार्थ का उल्लेख किया गया है जिससे मालूम होता है कि इस्लाम धर्म अम्न का वाहक और शान्ति का प्रचारक है और हिंसा, अतिवाद, आतंकवाद का सबसे बड़ा विरोधी है।

अत्याचार निन्दित कार्य है, अल्लाह तआला न्याय को पसन्द करता है और अत्याचार को अप्रिय समझता है क्योंकि अत्याचार अम्न व शान्ति व्यवस्था को भंग कर देता है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है ''और अल्लाह अत्याचारियों को पसन्द नहीं करता है'' (सूरे आले इमरान-५७)

संसार में अत्याचार करने वाले क्यामत के दिन अल्लाह के प्रकोप के शिकार होंगे। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है ''और चूंकि तुमने दुनिया में जुल्म किया था, इसीलिये आज तुम्हारी यह बात तुम्हें कोई भायदा नहीं पहुंचाएगी तुम सब अज़ाब में शरीक हो'' (सूरे जुख़्रूफ ३९)

ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमायाः खबरदार! जिस किसी ने किसी जिम्मी पर अत्याचार किया या उसकी तनकीस (उसके अधिकार में कमी) की या उसकी ताकत से बढ़कर उसे किसी बात का मुकल्लफ किया या उसकी हार्दिक खुशी के बगैर कोई चीज़ ली तो क्यामत के दिन मैं उसकी तरफ

से पक्षकार बनूंगा। (अबू दाऊद ३०५२, अल्लामा अलबानी ने इस हदीस को सहीह करार दिया है)

अल्लाह तआला फितना और फसाद फैलाने वालों को कदापि पसन्द नहीं करता है वह अम्न व शान्ति को पसन्द करता है कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है ''अल्लाह की दी हुयी रोज़ी से खाओ और पियो और ज़मीन में फसाद न करते फिरो''। (सूरे बक़रा ६०)

कुरआन में अल्लाह तआला कहता है ''और कोई आदमी ऐसा होता है जिसकी बात दुनियावी जिन्दगी में आपको पसन्द आ गयी और अल्लाह को अपने दिल की सच्चाई पर गवाह बनाता है हालांकि वह बदतरीन झगड़ालू होता है और वह जब आपके पास से लौटता है तो वह ज़मीन में फसाद फैलाने की कोशिश करता है और खेतों और मवेशियों को हलाक करता है और अल्लाह फसाद को पसन्द नहीं करता है''। (सूरे बकरा २०४-२०५)

इस्लाम धर्म की बुनियाद ही नर्मी और आसानी पर है। इस धर्म में किसी भी तरह की मामूली जबरदस्ती की गुंजाइश नहीं है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है ''दीन के मामले में किसी तरह की जबरदस्ती नहीं है''। (सूरे बकरा २५६)

कुरआन की इस आयत में अल्लाह ने स्पष्ट रूप से बता दिया है कि किसी भी इन्सान को इस्लाम धर्म में दाखिल होने के लिये मजबूर नहीं किया जा सकता।

इस्लाम के इतिहास का अध्ययन करने से यह बात सपष्ट हो जाती है कि जब भी मुसलमान किसी शहर या एलाके में गये तो वहां के लोगों को इस्लाम पर मजबूर नहीं किया बल्कि उन्हें अपने धर्म पर बाकी रहने का अधिकार दिया जिससे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि इस्लाम अम्न व शान्ति का झण्डावाहक है।

इस्लाम ने इन्सानी जानों को अत्यंत सम्माननीय करार दिया है। इसका अन्दाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि उसने इन्सानी जान की हत्या को पूरी मानवता के कत्ल के समान करार दिया है कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है।

''इसी लिये बनी इस्राईल पर जो शरीअत नाजिल की उसमें हमने लिख दिया था कि जो कोई किसी जान को बगैर किसी जान के बदले या बिना मुल्क में फ़साद करने की सजा के मारता है वह गोया तमाम लोगों को कत्ल करता है और जिसने किसी नफ़्स (प्राण) को जीवित रखा तो उसने गोया सब लोगों को जिन्दा रखा है''। (सूरे माइदा ३२)

ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया जिस शख्स ने मुआहिद को कत्ल किया वह जन्नत की खुश्बू तक नहीं पायेगा और यकीनन उसकी खुश्बू चालीस साल की दूरी तय करने पर महसूस की जाती है। (बुखारी ३१६६)

ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया यहूदी ईसाई और मुआहिद की दिय्यत एक मुसलमान की दिय्यत की तरह है। मुसन्नफ अब्दुर्ज्जाक ९७,८९/१)

ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया इन्सानों के अधिकार के सिलसिले में क्यामत के दिन सबसे पहले नाजायज खून बहाने के बारे में प्रश्न होगा। (सहीह बुखारी ८६६४)

इस्लाम में किसी भी धर्म के धर्म गुरूओं के कत्ल को हराम करार दिया गया है। अब्दुल्लाह बिन अब्बास बयान करते हैं कि ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया

गददारी न करना, धोका न देना, लाशों को अपमानित न करना, बच्चों और पादरियों को कत्ल न करना। (मुसनद अहमद २७३८ मुसन्नफ इब्ने अबी शैबा ३३३२ मुस्नद अबू याला २५४६)

अल्लाह ने कुरआन में किसी के पूज्य को गाली देने से सख़्ती से रोका है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है "और ऐ मुसलमानो! तुम उन लोगों को गालियां न दो जो अल्लाह के अलावा को पुकारते हैं इसलिये कि वह बिना जाने समझे ज्यादती करते हुये अल्लाह को गाली देंगे"।

यह हकीकत है कि एक इन्सान जिस की वह उपासना करता है तो वह उससे अथाह मुहब्बत करता है और अपने पूज्य को दुनिया की तमाम चीज़ों के मुक़ाबले ज्यादा चाहता है इसलिये जब कोई किसी के पूज्य (माबूद) को बुरा भला कहेगा तो दूसरा भी बदले में दूसरे के माबूद को गाली देगा जिससे समाज में अशान्ति होने की शंका है इसी लिये इस्लाम में दूसरों के पूज्यों को बुरा कहने से रोका गया है। ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने एक बार चूटियों के बिल को देखा कि उसे जला दिया गया है तो आपने कहा आग से अजाब देने का अधिकार आग के रब के अलावा किसी के लिये वैध नहीं है। (सुनन अबू दाऊद २६७५ अल्लामा अलबानी ने इस हदीस को सहीह करार दिया है)

इस हदीस से आप अन्दाजा लगायें कि जब इस्लाम में एक दुख देने वाले जानदार को आग से जलाना हराम है तो फिर इन्सान को जलाना कैसे जायज और दुरूस्त हो सकता है? इसी तरह से इस्लाम में जानवरों के अधिकारों से संबन्धित जो शिक्षाएं हैं अगर उनका निष्पक्ष हो कर अध्ययन किया जाए तो हक़ीक़त स्पष्ट हो जाती है कि इस्लाम हर प्राणी के अधिकारों का ख्याल रखने पर बल देता है और किसी भी जानदार को सताने को महा पाप क़रार देता है।

मर्कजी जमीअत अहले हदीस हिन्द की पत्रिकाओं का सदस्य बनाने के लिये सहयोग करें।

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द अपने अपने लक्ष्य की प्राप्ति की ओर अग्रसर है। जमीअत के तीन आर्गन निरंतर प्रकाशित हो रहे हैं।

जरीदा तर्जुमान पाक्षिक (उर्दू) 150 वार्षिक

इस्लाहे समाज मासिक (हिन्दी) 100 वार्षिक

दी सिम्पल ट्रुथ मासिक (अंग्रेज़ी) 100 वार्षिक

खुद भी पढ़ें और दूसरों को खरीदार बनवायें। यह एक मिशन है जिसको कामयाब बनाना हम सब की संयुक्त ज़िम्मेदारी है।

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया

हज़रत मुआज़ बिन जबल रजियल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि मुझ से रसूल स०अ०व० ने फरमाया जिस शख्स का आखिरी कलाम ''लाइलाहा इल्लल्लाह'' हो वह जन्नत में जायेगा। (अबू दाऊद ३११६)

❑ अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजियल्लाहो अन्हुमा बयान करते हैं कि मैंने रसूल स०अ०व० को फरमाते हुए सुना कि जिस किसी मुसलमान के मरने पर चालीस ऐसे आदमी जनाज़े की नमाज़ पढ़ा दें जो अल्लाह के साथ शिर्क न करते हों तो अल्लाह तआला उनकी सिफारिश उसके हक़ में कुबूल करता है। (मुस्लिम-६४८)

❑ अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि रसूल स०अ०व० ने फरमाया जो शख्स किसी के जनाज़े में नमाज़ की अदायगी तक शामिल रहे तो उसे एक कीरात के बराबर सवाब मिलेगा। पूछा गया कि कीरात का क्या अर्थ है तो आप ने फरमायाः दो बड़े पहाड़ अर्थात नमाज़े जनाज़ा और तदफीन तक साथ रहने वाला दो बड़े पहाड़ों के बराबर सवाब लेकर वापस लौटेगा। (सहीहुल बुखारी १३२५, सहीह मुस्लिम ६४५)

❑ हज़रत अनस रजियल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि आपने फरमाया क्यामत की निशानियों में से है कि इल्म उठा लिया जायेगा, जाहिलियत बढ़ जायेगी और शराब पिया जायेगा ज़िना (व्यभिचार) आम हो जायेगा। (बुखारी-मुस्लिम)

हज़रत आइशा रजियल्लाहो तआला अन्हा बयान करती हैं कि रसूल स०अ०व० ने महल्लों में मस्जिदें बनाने उन्हें पाक साफ और खुश्बूदार रखने का हुक्म दिया है। (अबू दाऊद)

❑ जिसने अल्लाह की खुशी के लिये मस्जिद बनायी तो अल्लाह तआला उसके लिये जन्नत में वैसा ही घर बनायेगा। (बुखारी-४५०)

❑ मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब तुम्हारा गुज़र जन्नत के बागों में से हो तो उसके फल खाओ। हज़रत अबू हुरैरा रजिअल्लाहो अन्हो ने पूछा कि ऐ अल्लाह के रसूल! जन्नत के बाग कौन से हैं? तो मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया कि मस्जिदें हैं।

❑ मुहम्मद स०अ०व० ने फरमायाः मोमिन की मौत के बाद उसके कर्म और अच्छे कामों से जिसका उसे सवाब मिलता है वह सात हैं। इल्म जो उसने दूसरों को सिखाया और फैलाया २. नेक लड़का ३. कुरआन मजीद, जिसका किसी को इल्मी वारिस बनाया। ४. मस्जिद जिसने बनवायी ५. घर जो मुसाफिरों के लिये बनवाया। ६. नहर ७. सदक़ा जो अपनी जिन्दगी में स्वस्थ होने की हालत में दिया। इन सात कामों का सवाब मौत के बाद भी इन्सान को मिलता रहता है।

❑ ❑ ❑

हदीस

प्रो० डा० मुहम्मद ज़ियाउर्रहमान आज़मी रह०

हदीस से अभिप्राय है नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का कथन और कर्म। किसी का आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने कोई काम करना, या कुछ कहना और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का उसपर कोई प्रतिक्रिया व्यक्त न करना भी हदीस के अन्तर्गत आता है। वैसे इसको इस्लामी परिभाषा में तक़रीर कहते हैं। यह उर्दूवाली तक़रीर (भाषण) नहीं है, बल्कि इसका अर्थ है किसी बात पर नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इनकार नहीं किया।

यूं तो कुरआन में इस अर्थ में हदीस का वर्णन नहीं आया है, परन्तु कुरआन में नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस कथन और कर्म को विभिन्न तरीकों से बयान किया गया है जैसे-

''रसूल तुम्हें जो कुछ दे, उसे ग्रहण करो और जिस चीज़ से तुम्हें रोके उससे रूक जाओ और अल्लाह का डर रखो। निस्सन्देह अल्लाह कड़ी यातना देने वाला है।'' (सूरा-५९, अल-हश्र, आयत-७)

इसी प्रकार अल्लाह का यह आदेश-

''किसी ईमान वाले पुरूष, और ईमान वाली स्त्री को यह हक़ नहीं है कि जब अल्लाह और रसूल किसी बात का निर्णय कर दें तो फिर उन्हें अपने मामले में कोई अधिकार शेष रहे। जो कोई अल्लाह और उसके रसूल की अवज्ञा करे तो वह खुली गुमराही में पड़ गया।'' (सूरा-३३, अल-अहज़ाब, आयत-३६)

एक स्थान पर उन लोगों को सचेत किया गया है जो रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की अवज्ञा करते हैं-

''ऐ ईमान वालो, अपने बीच रसूल को इस प्रकार मत पुकारो जिस प्रकार तुम एक दूसरे को पुकारते हो। निस्सन्देह अल्लाह उन लोगों को भली-भांति जानता है जो तुममें से आंख बचाकर निकल जाते हैं। तो जो लोग उसके आदेश की अवज्ञा करते हैं, उनको डरना चाहिए फिर ऐसा न हो कि उनपर कोई आज़माइश आ पड़े या वे दुखद यातना में पढ़ जाएं (सूरा-२४, अन-नूर, आयत-६३)

इस्लाम में हदीस का बड़ा महत्व है। इस्लाम के दो ही मूल स्रोत हैं, एक कुरआन और दूसरा हदीस। हदीस की इसी महत्ता के कारण, मुस्लिम विद्वान प्रारम्भ से ही हदीसों को इकटठा करने की चेष्टा करते रहे। इन विद्वानों को मुहद्दिस (हदीस-विशेषज्ञ) कहते हैं। हदीसों की रिसर्च और जांच-परख के लिए उन्होंने कुछ नियम निश्चित किए, ताकि सहीह और ज़ईफ हदीस को परखा जा सके।

जैसे सहीह हदीसों के लिए निम्नलिखित शर्तें लगाईं।

१. उसकी सनद मुसलसल हो अर्थात् बीच में कोई ऐसा रावी न हो, जिसने अगले रावी से हदीस न सुनी हो।

२. सनद का हर रावी न्यायशील (आदिल) हो।

३. सनद का हर रावी दृढ़

स्मरण-शाक्ति रखता हो।

४. वह हदीस शाज़ न हो, अर्थात किसी अपने से ऊंचे रावियों के विरुद्ध न हो।

हदीस की जिस सनद में ये शर्तें पाई जाएंगी, उसको सहीह कहा जाएगा और जिस सनद में इनमें से कोई भी शर्त लुप्त हो जाएगी उसे ज़ईफ कहा जाएगा। हदीस का ज्ञान एक स्थायी विद्या है, जिस पर बहुत सारी पुस्तकें लिखी गई हैं। इसके लिए मेरी अरबी पुस्तक ''मुअ्जम मुस्तलिहात हदीस'' लाभदायक है, जो अब उर्दू भाषा में भी प्रकाशित हो गई है। इस समय हदीस की मुख्य पुस्तकें ये हैं।

१. सहीह बुख़ारीः इसके रचयिता इमाम अबू-अबदुल्लाह-मुहम्मद बिन इसमाईल बुखारी हैं, जो सन १९४ हिजरी में पैदा हुए, और २५६ हिजरी में उनका देहान्त हुआ। इस किताब की सभी हदीसें सहीह हैं, जिनकी संख्या बिना पुनरावृत्ति के २६०२ बनती है। जबकि पुनरावृत्ति की स्थिति में इनकी संख्या ९०८२ है, जैसा कि इस किताब के प्रसिद्ध भाव्यकार हाफिज़ इब्ने-हजर ने अपनी किताब फत्हुलबारी में बताया है।

२. सहीह मुस्लिमः इसके रचयिता इमाम मुस्लिम-बिन-अल-हज्जाज नीशापूरी हैं, जो सन २०४ हिजरी में नीशापुर में पैदा हुए, और सन २६१ हिजरी में उनका देहान्त हुआ। इस किताब की भी सभी हदीसें सहीह हैं, जिनकी संख्या बिना पुनरावृत्ति के ३०३३ और पुनरावृत्ति की स्थिति में ७३९० है। जैसा कि मशहूर-बिन-हसन ने अपनी पुस्तक ''इमाम मुस्लिम और आपकी किताब सहीह मुस्लिम'' में बताया है।

३. सुनन अबू दाऊदः इसके रचयिता इमाम अबू-दाऊद हैं जो सन २०२ हिजरी में पैदा हुए और सन २७५ हिजरी में इस नश्वर संसार से चल बसे। इस पुस्तक में कुल ४०८० हदीसें हैं, परन्तु इनमें सब सहीह नहीं हैं।

४.सुनन तिरमिज़ीः इसके रचयिता इमाम अबू-ईसा मुहम्मद-बिन-ईसा तिरमिज़ी हैं, जो सन २०९ हिजरी में पैदा हुए और सन २७९ हिजरी में उनका देहान्त हुआ। इनकी हदीसों की संख्या लगभग ३९५६ है, परन्तु इनमें से कुछ हदीसें सहीह नहीं है।

५. सुनन नसईः इसके रचयिता इमाम नसई हैं, जो सन २१५ हिजरी में पैदा हुए और सन ३०३ हिजरी में उनका निधन हो गया। इनकी हदीसों की संख्या लगभग ५७५८ है। परन्तु इनमें से कुछ हदीसें सहीह नहीं हैं।

६.सुनन इब्ने माजाः इसके रचयिता इमाम इब्ने-माजा हैं, जो सन २०९ हिजरी में पैदा हुए और सन २७३ हिजरी में उनका निधन हो गया। इनकी हदीसों की संख्या ४३४१ है। इनमें से कुछ हदीसें सहीह नहीं हैं। इसलिए मुहद्दिस शैख अल्बानी ने अन्तिमो-ल्लिखित चार पुस्तकों में से हर एक को दो भागों में बांटा है।

एक सहीह, दूसरी ज़ईफ अर्थात सहीह अबू-दाऊद और दूसरी ज़ईफ अबू-दाऊद, सहीह तिरमिज़ी और दूसरी ज़ईफ़ तिरमिज़ी, सहीह नसई और दूसरी ज़ईफ़ नसई, सहीह इब्ने माजा और दूसरी ज़ईफ इब्ने माजा।

इन छह ग्रन्थों को मिलाकर सिहाह सित्ता भी कहा जाता है, जिसका अर्थ है छह सहीह किताबें। परन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि इन छह किताबों में जो कुछ है सब

सहीह है। बल्कि जैसा बताया गया सहीह बुखारी तथा सहीह मुस्लिम के अतिरिक्त शेष चार किताबों में कुछ ज़ईफ़ हदीसें भी पाई जाती हैं। इसलिए 'सिहाह सित्ता' का अर्थ है कि इन पुस्तकों में अधिकतर हदीसें सहीह हैं। हदीस की दूसरी प्रसिद्ध पुस्तकों में मुस्नद इमाम अहमद है, जिसके रचयिता इमाम अहमद-बिन-हम्बल हैं, जो सन १६४ हिजरी में मरो में पैदा हुए और सन २४१ हिजरी में इस दुनिया से चल बसे। उनकी इस पुस्तक में हदीसों की संख्या २४६४७ है, जो नई रिसर्च के साथ पचास भागों में प्रकाशित हुई है। इसके अन्तिम पांच भाग केवल विषय सूची हैं।

हदीस की पुस्तकों की सही-सही संख्या बता पाना सम्भव नहीं है। इसके लिए कत्तानी (देहान्त सन १३४५ हिजरी) की किताब ''अर्रेसाला मुस्ततरफा'' देखना लाभदायक है।

परन्तु सहीह दहीसों की संख्या मेरे विचार में पन्द्रह हज़ार के निकट है। इनपर मैं कई वर्षों से काम कर रहा हूं। इसका नाम अल-जामिउल कामिल रखा गया है। आशा है कि १५ से १६ भागों में यह काम पूरा हो जाएगा।

(''कुरआन मज़ीद की इन्साइक्लोपीडिया'' से)

पाठक गण ध्यान दें

1-जल्द से जल्द बकाया राशि भेज दें। 2-अगर आपको हर महीने की 5 तारीख को पत्रिका न मिले तो इसके बारे में कार्यालय को सूचित करें। न मिलने की सूरत में दूसरी कापी भेजी जायेगी, लेकिन शिकायत करने से पहले अपने नजदीकी डाकखाने पर जानकारी हासिल कर लें। 3-नये खरीदारों से अनुरोध है कि अपने पते में फोन नम्बर अथवा मोबाइल नम्बर और पिन कोड भी लिखें। 4-पुराने खरीदारों से अपील की जाती है कि यदि उनका कोई फोन नम्बर या मोबाइल नम्बर हो तो पोस्ट कार्ड पर या फोन के जरिये अपने खरीदारी नम्बर का हवाला देकर अवश्य भेज दें ताकि जरूरत पड़ने पर उनसे सम्पर्क किय जा सके। 5- मनी आर्डर या हमारे प्रतिनिधियों के माध यम से पत्रिका के सदस्य बनने वालों को यह सूचित किया जाता है कि रसीद कटवाने के बाद दूसरे महीने ही में पत्रिका भेजी जायेगी। 6- किसी भी तरह की शिकायत के लिये इस नम्बर पर संपर्क करें। 7. नए और पुराने सदस्यों से अुनरोध है कि नक़द पैसा कोरियर और जनरल डाक से न भेजें। इसलाहे समाज के बारे में किसी भी तरह की शिकायत के लिये 3 बजे से 5 बजे तक फून करें। 011-23273407

आँध्रा प्रदेश और अन्य राज्यों में सैलाब से जानी व माली नुक़्सानात पर रंज व ग़म का इज़हार और सहयोग की अपील

दिल्ली-२५ नवम्बर २०२१

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अमीर मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी ने देश के अनेक राज्यों विशेष रूप से आंध्रा प्रदेश के निल्लोर, चित्तौर, कड़पा, करनौल आदि जिलों, तमिल नाडो और केरला के विभिन्न स्थानों पर गैर मामूली (असाधरण) बारिश की वजह से सैलाब की खराब स्थिति और इस के नतीजे में होने वाले भारी जानी व माली नुक़सानात पर सख्त रंज व गम का इज़हार किया है। मरने वालों के परिवारजनों से हमदर्दी का इज़हार किया है और मुसीबत की इस घड़ी में सभी से इन्सानियत के नाते सहयोग की अपील की है।

उन्होंने कहा प्रभावित क्षेत्रों विशेष रूप से आंध्रा प्रदेश में रिन्तर वर्षा की वजह से बहुत जानी व माली नुक्सान हुए हैं, दर्जनों जानें गई हैं, सैकड़ों घर ढ़ह गये हैं, दुकाने तबाह हो गई हैं, खेतियां बर्बाद हो गई हैं, लोग दाना-दाना को तरस गये हैं और घरों से बाहर अस्थायी कैम्पों में रहने के लिये मजबूर हैं इसलिये कौम व मिल्लत के शुभचिंतकों से बिना किसी अन्तर के अपील की जाती है कि मुसीबत की इस घड़ी में वह मानवता के इस रिश्ते को निभाते हुए अपने भाइयों की भरपूर सहायता करें। इसी तरह राज्य व केन्द्रीय सरकारों से भी अपील की जाती है कि प्रभावितों को राहत पहुचाने, पुनर्वास और नुकसानात के मुआवज़े के सिलसिले में उचित इक़दामात करें, इसमें किसी भी प्रकार की कोताही न बर्ती जाए और प्रशासन को पूरी तरह चौकस कर दिया जाए।

अमीर महोदय ने अपने बयान में कहा कि मुसीबत की इस घड़ी में प्रभावितों के लिये दुआ करें खास तौर से तमाम राज्य इकाइयों के जिम्मेदारान अपने-अपने राज्य से प्रभावितों का भरपूर सहयोग करें। भूतपूर्व में भी आप इस तरह के हालात में मदद करते रहे हैं। निस्सन्देह इतने बड़े पैमाने पर जान व माल की तबाही व बर्बादी प्राकृतिक व्यवस्था का भाग है और इस तरह की प्राकृतिक आपदा जमीन पर बसने वाले हम इन्सानों के गुनाहों के आम हो जाने की वजह से भी आती हैं और इस तरह अल्लाह तआला संभलने के लिए कभी कभी अपनी निशानियां जाहिर करता है और अपने बाज़ बन्दों को आज़माता है अतः इससे बन्दों को पाठ प्राप्त करना चाहिए। संयम एवं आत्मनिरीक्षण से काम लेना चाहता। परेशानियों में लिप्त लोगों के लिये अल्लाह से सुख की दुआ करनी चाहिए और उनके सहयोग में जहां तक संभव हो हिस्सा लेना चाहिए। अल्लाह प्रभावितों की विशेष मदद फरमाये और हम सबको हर तरह की मुसीबतों और बीमारियों से सुरक्षित रखे और भलाई के कामों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेने की क्षमता दे। आमीन

(जरीदा तर्जुमान १-१५ दिसम्बर २०२१)

आंध्रा प्रदेश और अन्य राज्यों में सैलाब से जानी व माली नुक़सानात पर रंज व ग़म का इज़हार, सहयोग और दुआ की अपील

देश के विभिन्न राज्यों महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, बिहार, उत्तराखण्ड, केरल विशेष रूप से आंध्रा प्रदेश के निल्लोर, चित्तौर, कड़पा, करनौल वगैरह ज़िलों में गैर मामूली बारिश की वजह से सैलाब की खराब स्थिति और इसके परिणाम में होने वाले भारी जानी व माली नुकसानात सख्त रंज व गम का कारण हैं और मुसीबत की इस घड़ी में आप सब ही से इन्सानियत के नाते सहयोग और दुआ की अपील है। प्रभावित क्षेत्रों विशेष रूप से आंध्रा प्रदेश में रिन्तर वर्षा की वजह से बहुत जानी व माली नुक्सान हुए हैं, दर्जनों जानें गई हैं, सैकड़ों घर ढ़ह गये हैं, दुकाने तबाह हो गई हैं, खेतियां बर्बाद हो गई हैं, लोग दाना-दाना को तरस गये हैं और घरों से बाहर अस्थायी कैम्पों में रहने के लिये मजबूर हैं इसलिये कौम व मिल्लत के शुभचिंतकों से बिना किसी अन्तर के अपील की जाती है कि मुसीबत की इस घड़ी में वह मानवता के इस रिश्ते को निभाते हुए अपने भाइयों की भरपूर सहायता करें। इसी तरह राज्य व केन्द्रीय सरकारों से भी अपील की जाती है कि प्रभावितों को राहत पहुचाने, पुनर्वास और नुकसानात के मुआवज़े के सिलसिले में उचित इक़दामात करें, इसमें किसी भी प्रकार की कोताही न बर्ती जाए और प्रशासन को पूरी तरह चौकस कर दिया जाए।

मर्कज़ी जमीअत मुसीबत की इस घड़ी में प्रभावितों के लिये दुआ और तमाम भाइयों विशेष रूप से अपनी तमाम राज्य इकाइयों के पदधारियों से उनकी मदद के लिये अपने अपने राज्यों से भपरूर सहयोग की अपील करती है। निःसन्देह इतने बड़े पैमाने पर जान व माल की तबाही व बर्बादी प्राकृतिक व्यवस्था का भाग है और इस तरह की प्राकृतिक आपदाएँ ज़मीन पर बसने वाले हम इन्सानों के पापों के साधारण हो जाने की वजह से भी आती हैं और इस तरह अल्लाह तआला सँभलने के लिये कभी कभी अपनी निशानियाँ ज़ाहिर करता है और अपने बाज़ बन्दों को आज़माता है इस लिये इस से बन्दों को पाठ हासिल करना चाहिए और सब्र एवं आत्मनिरीक्षण से काम लेना चाहिए और विश्व स्तर पर जहाँ भी लोग तरह-तरह की परेशानियों में लिप्त हैं सबके लिये अल्लाह से आफियत की दुआ करनी चाहिए और उनके सहयोग में जहाँ तक संभव हो हिस्सा लेना चाहिए। अल्लाह तआला प्रभावितों की विशेष मदद फरमाए और हम सबको हर तरह की मुसीबतों व बीमारियों से सुरक्षित रखे और भलाई के कामों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेने की क्षमता दे। आमीन

अपील कर्ताः- **असगर अली इमाम महदी सलफी**

अध्यक्ष मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द व अन्य जिम्मेदारान व सदस्यगण

चेक/ड्राफ्ट इन नामों से भेजें।

Markazi Jamiat Ahle Hadees Hind
A/c: 629201058685
ICICI Bank (Chandni Chowk Branch)
RTGS/NEFT IFSC Code-ICIC0006292

Ahle Hadees Relief Fund
A/c No. 200110100007015
Bombay Mercantile Cooperative Bank LTD
IFSC Code: BMCB0000044
Branch: Darya Ganj, New Delhi